V. ॥ १४ a. b. c ॥ १ ॥ १४ d. e ॥ २ ॥ १५ a ॥ ३ ॥ १५ b [बृहन्ग्रावासि]. c [- हव्यं श°] - - °ध्व हविष्कृदेहि ॥ ४ ॥ १६ a [- ग्रावेद् वयं संघाति-संघाति जेष्म] ॥ ५ ॥ १६ b. c. d [प्रतिपूता अरातयः] ॥ ६ ॥ १६ e. f. g [- सविता प्रतिगृह्णातु हिरण्यपाणिरहि° -] ॥ ७ ॥ २६ ॥

VI. ॥ १७ a. b. c ॥ १ ॥ १७ d ॥ २ ॥ १८ a. b. c ॥ ३ ॥ १८ d [°धामि द्विषतो वधाय]. e. f ॥ ४ ॥ ३० ॥

VII. ॥ १९ a. b. c ॥ १ ॥ १९ d. e [°म्भन्यसि]. f ॥ २ ॥ २० a °वान्धिनुहि यज्ञं धिनुहि यज्ञपतिम् ॥ धिनुहि मां यज्ञन्यम् ॥ ३ ॥ २० b - g ॥ ४ ॥ वेदोऽसि वेद् येन त्वं देव वेद देवेभ्यो वेदोऽभवः ॥ तेन मह्यं वेदो भव ॥ ५ ॥ ३५ ॥

VIII. ॥ २१ [- जगतीभिः सं मधुम° -] ॥ १ ॥ २२ a - f ॥ २ ॥ २२ g °सीदन्तरितं रक्षोऽन्तरिता अरातयो. h ॥ ३ ॥ २३ ॥ ४ ॥ ३९ ॥

IX. ॥ २४ ॥ १ ॥ पृथिव्यै वर्मासि २४ a ॥ २ ॥ २५ b. c. d ॥ ३ ॥ २६ [°रुं बध्यासं पृथिव्यै देवयजनाद्व°] ॥ ४ ॥ २७ ॥ ५ ॥ २८ a [°स्तां धीरा°]. c ॥ ६ ॥ ४५ ॥

X. ॥ २९ [°मार्ग्मि] ॥ १ ॥ ३० a °त्वासीन्द्राण्यै संनहनं b. c. d - श्यामि ॥ २ ॥ अग्नेर्जिह्वासि सुभूर्देवेभ्यो धाम्नेधाम्ने भव यजुषेयजुषे ॥ ३ ॥ ३१ - जनम् ॥ ४ ॥ यस्ते प्राणः पशुषु प्रविष्टो देवानां विष्ठामनु यो वितस्थे ॥ आत्मन्वांत्सोम घृतवान्हि भूत्वाग्निं गच्छ स्वर्यजमानाय विन्द ॥ ५ ॥ ५० ॥

दशानुवाकेषु पञ्चाशत् ॥ ॥

इति काण्वशाखायां संहितापाठे प्रथमोऽध्यायः ॥ ॥